बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नूरनामा ॥

उर्दू से हिन्दी में लिखागया

जिसको

यन्त्रालय के श्रेष्ठ विद्वानों ने अति परिश्रम से शोधा

पहली बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा

सन् १९१२ ई० ॥

॥ नूरनामा ॥

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ।

करूं पहिले मैं उसकी हमदो सना । कि कुदरत से उस की है क्या २ बना ॥ वोह है खालिके खल्क परवरदिगार । कि पैदा किया जिसने लैलो नहार ॥ उसीकी यह कुदरत हैं शमसो कमर । जो गर्दिश में रहतेहैं शामो सहर ॥ सितारोंसे दी जेब अफ़लाकको । बशरसे मुनव्वर किया खाकको ॥ अजब बाग़ा आलम को बख़्शी बहार । खिलाए हर एक रंगके गुल हज़ार ॥ हरएकशै जहाँतक कि मौजूद है । उसीसे है पैदा वोह माबूद है ॥ दरख्तो गुलो मुर्गो शबनम सबा । उसीका करें जिक्र

सुबहो मसा॥ अगर आबो आतश है या खाक बाद। ये जितने हैं सब उसके हैं महवे याद॥ दिला कर सदा याद हक और बस। के अल्लाह बस और बाकी हवस॥

दर नात जनाब पैग़म्बर सल्लल्लाह अलैहे व सल्लम।

करूँ याँसे अब नात अहमद रकम। कि फूले समाए न शाखे कलम॥ मोहम्मद है सालार कुल अम्बिया। कही जिसकी लौलाक हक ने सना॥ किया हकने पैदा जो अव्वल वोह नूर। उसी नूर से सबने पाया जहूर॥ खुदा उनको पैदा न करता अगर। न होते ये अफलाक जिन्नो

बशर ॥ मोहम्मद दो आलमका मतलूब है । खुदाए जहाँ का वोह महबूब है ॥ दरूदेखुदा उनके ऊपर मुदाम । दिगर आल व असहाब सब पर तमाम ॥

दर बयान कैफ़ियत नूरनामा ।

बयाँ याँसे हजरतके है नूरका । मोहम्मद नबी हकके मंजूरका ॥ रवायत सहीहा है इस तौरसे । सुनें नूरनामे को सब गौरसे ॥ नहीं इसमें कुछ झूठ मैंने कहा । लिखा इसमें सब रास्त है और बजा ॥ जबाने अरबमें था यह लाकलाम । किया नज्म हिन्दी में मैंने तमाम ॥ अगरचे थी अफसह वह अर्बी जबाँ । वलेकिन समझ उसकी थी बस गराँ ॥ समझ उसकी हर यक को दुश्वार थी । कि हिन्दी जबाँ याँतो दरकार थी ॥ इसीके सबब

मैंने कर फ़िक्रो गौर । लिखा नूरनामेको हिन्दीके तौर ॥ पढ़ेगा जो इसको तो होगा सवाब । सुने दिलसे जो इसको हो कामयाब ॥ हकीकत है इसमें लिखी नूर की । मोहम्मद नबी हकके मंजूर की ॥ यकीं इसपर लावे जो कोई तमाम । तो जन्नत में पावेगा आली मोकाम ॥ न लायेगा जो शख्स इसपर यकीं । तो होगा जहन्नम में वह जा गुज़ीं ॥ सुने जो कोई इसको बा एतकाद । करे मुझको भी फातहा से वोह याद ॥ यही अर्ज है मेरी सुन क़ारिया । कि तूभी करे मेरे हक़ में दोआ ॥ दोआ है कि या रब्बि अन्तलग़फ़ूर । मुसन्निफ़ को तू बख़्शदीज्यो जरूर ॥

दर बयान आग़ाज़ पैदायश नूर मोहम्मद सल्लल्लाह

अलैहे व सल्लम ।

सुनो याँ से अब नूरकी इब्तिदा । रवायत सहीहा में यों है लिखा ॥ नबी और जिब्रील यक दिन तमाम । थे आपसमें बायक दिगर हम कलाम ॥ मगर फ़ातमा भी थीं हाज़िर वहाँ । नबी से कहा यह करो तुम बयाँ ॥ कि तुम ही बड़े याकि हैं जिब्रईल । मुझे इस्की बतलादो अब तुम दलील ॥ नबीने कहा मुझको हकने बड़ा । किया सब खलायक में है बरमला ॥ ये जिब्रील बोले नबीसे कलाम । बड़ेहो तुम्हीं ऐ नबी ज़ुल्किराम ॥ व लेकिन् तो हूं उम्रमें मैं बड़ा । कि सिनसाल मेरा है तुमसे सिवा ॥ नबीने कहा ऐ अखी जिब्रईल । बता उम्रकी अपने मुझको दलील ॥ कहा फिर यह जिब्रील ने ऐ रसूल । खुदाकी तु

दरगाह में है क़बूल ॥ खुदाने मुझे जबकि पैदा किया । सिवा जाते हक़ और कुछ भी न था ॥ मगर मुझसे भी आगे एक जगमगा । सितारा जो था हक़ने पैदा किया ॥ रहा वोह पड़ा साल सत्तर हज़ार । लिया फिर बुलंदीपर उसने क़रार॥ हुआ कुदरते हक़्क़से वोह जब बुलंद । सितारा जो था नूर से अर्जुमंद ॥ मैं देखा किया साल सत्तर हज़ार । करौ तुम मेरी बातका येतबार ॥ नबी ने कहा वोह मेरा नूर था । सितारा जो देखा था तूने बजा ॥ सो उससे भी आगे मेरा नूर था । कि लाखों बरस पहिले पैदा हुआ ॥ खुदाने किया पहिले पैदा वो नूर । किया अपनी क़ुदरत से उसका ज़हूर ॥ नबी ने ये जिब्रील से फिर कहा । कि सुन अब मेरे नूरका माजरा ॥ मेरा नूर जिस वक़ पैदा हुआ । खुदाको उसी वक़

सिजिदा किया॥ ये फ़रमान आया कि नूरे नबी। उठा सरको सिजिदे से और कर खुशी॥ मेरा तो तुम्हीं से था मक़सद तमाम। तुझीसे है मतलब तुझीसे है काम॥ मुहब्बत से तेरी हैं पैदा किये। ये दरिया हैं दस सब तुझी को दिये॥ है एक इल्म का दूसरा हिल्मका। वोह है तीसरा बह्र इश्के खुदा॥ वह चौथा जो है बह्र ऐ नेक खू। समझ उसको खौफ़े इलाही का तू॥ जो है पांचवां बह्र रहेमत है वह। छठां बह्र सबसे सखावत है वह॥ जो है सातवां बह्र है शुक्रका। हुआ आठवां बह्र अक्कोजका॥ नवां फ़क़्रका बह्र मशहूर है। जो दसवां है वह कुलज़ुमे नूर है॥ नबीने कहा फिर कि ऐ जिब्रईल। मेरे नूर की और तू सुन दलील॥ न था आसमाँ वो न थी तब ज़मीन। मेरा नूर पैदा था और कुछ नहीं॥

हरएक बह्रमें साल दस २ हज़ार। किये नूरने सिजदे बस बेशुमार॥ किया हक़ने फिर साल सत्तर हज़ार। मेरे नूर का आप मौकूफ़कार॥ हुआ नूर ख़ामोश ख़िलवत गुज़ीं। बहुक्मे ख़ुदा ये ज़मानो ज़मीन॥ बरस जब कि ज्ञाहूद गुज़रे तमाम। कहा हक़ने फिर नूरको कर ख़िराम॥ कि ऐ नूर ख़िलवत से बाहर निकल। जो कुछ मैं कहूं उसपर तू कर अमल॥ मेरे हुक्मसे अब तू सारा बदन। मिला दे बस ऐ नूर पाकीज़ा तन॥ लिखी और रावी ने यों ये ख़बर। बक़ौले नबी पाक खैरुल्बशर॥ कि पैदा किया हक़ने अव्वल शजर। रखा नाम सज रुल् यक़ीं मऽतबर॥ दरख़्त एक शाखें थी उसमें हज़ार। नहीं उसके क़ुदरतका है कुछ शुमार॥ मेरा नूर फिर हक़ने पैदा किया। किया नूर से अपने उसको जुदा॥ बहुत खूब रोशन वोह दुरके

मिसाल। रखा उसको परदे में फिर चन्द साल॥ बनाई फिर एक शक्ल ताऊसकी। शजर पर जगह उसको रहनेकी दी॥ फिर उस नूरका सालसत्तर हज़ार। रहा उस शजर पर क़यामो क़रार॥ वहां पर मेरा नूर इतने बरस। रहा हक़्की तसबीह में हर नफ़स॥ अज़ाँबाद फिर हक़ने तख़लीक की। अयाँकी बस एक शक्ल आइनासीं॥ किया उसका भी उस शजर पर मुकाम। बफ़रमाने हक़ था जो उस जा कयाम॥ किया उसने मुँह सूये ताऊस जो। वो आईना उसके हुआ रूबरू॥ पड़ी उसपर ताऊस की जो नज़र। तो हैराँ हुआ आपको देखकर॥ निहायत जो खूब अपना देखा जमाल। हया वोह लगा करने उस दम कमाल॥ वोह खूबीको देख अपने सरमागया। किये पांच उस वक़्त सिजिदे अदा॥ हुई फ़र्ज फिर पंज बख़्ती

नमाज। नबी और उम्मतपर बासद नियाज॥
खुदाने नज़रंकी जो फिर नूर पर। अरक़ में हुआ
ग़र्क़ वोह सरबशर॥ फिर उस दम जो वह नूर
सरमागया। अरक़ उसको सर्ता बपा आगया॥
तो जुम्बिस्से क़तरे गिरे बेशुमार। गिरे मुँह से एक
लाख चौबिस हज़ार॥ पैग़म्बर हुये उनसे कम या
सिवा। शुमार उनका हक आपही जानता॥
जो माथे से उस वक़ कतरे गिरे। वहीं तीनसौ
तेरह मुर्शिल हुये॥ गिरे कतरे लाखोंहीं जो अज
वजूद। हुये सब मलायेक वोह उनसे नमूद॥
गिरा और कतरा जो यक अजजबी। हुआ चश्मा
हैवाँ का वोह बरज़बीं॥ जो दो चश्म से चार
क़तरे गिरे। वो चारों मलायेक मुकर्रब हुये॥
गिरे कानों से चार कतरे बहम। हुये अर्श कुर्सी
वलौहो कलम॥ जोशानोसे कतरे गिरे दोदिगर।

हुये उनसे पैदा यह शमसो कमर ॥ गिरे पाक-
बीनी से कतरे जोवाँ। बहिश्त और दोज़ख बनी
उनसे याँ ॥ गरज मजहरे हक वही नूर है। नबी
ने किया आप मजकूर है ॥ कहा फिर खुदाने
के नूरे नबी। उठाकर नज़र देख तू तो अभी ॥
कि पेश और पस और यमीना शुमाल। नज़र
क्या पड़े तुझको ऐ खुस जमाल ॥ नज़र की जो
उस नूरने फिर जिधर। तो चारों तरफ़ नूर आया
नज़र ॥ के आगे भी नूर और पीछे भी नूर।
वही दहिने बायें उसीका जहूर ॥ वोह थे चार
असहाब हकके वली। अबूबक्र फारोक उशमान
अली ॥ फिर उस नूर ने साल सत्तर हज़ार।
पढ़ी हक की तसबीह बस बेशुमार ॥ हुये फिर तो
पैदा सभी अम्बिया। मुहम्मदके उस नूरसे वा
सफ़ा ॥ जो फिर देखा वोह नूर बहरे करम। तो

अरवाहें पैदा हुई सब बहम ॥ सभों के यही आया फिर ध्यानमें । पढ़ा कलमा तैयबका उस आनमें ॥ अजाँबाद फिर अपनी कुदरत से जो । किया हकने पैदा है कन्दील को ॥ खुदाकी है हिकमत का दरया अमीक । कि कंदील पैदा किया आज अकीक ॥ वो था लाल से भी बहुत सुर्खतर । जो कि हकने फिर उसके ऊपर नज़र ॥ तो जाहिर में देखा बहुत साफ था । उस तह्र वातिबमें शफ्फाफ था ॥ तो फिर हकने बस दस्ते कुदरत उठा । मुहम्मद की सूरतको पैदा किया ॥ मगर उस्की अच्छीसी सूरत बना । रखा उस्में वोह जो के कंदील था ॥ खड़ा यों किया फिर बराजो नियाज । के पढ़ता खड़ाहो कोई ज्यों निमाज ॥ किया फिर तो अरवाहोंने भी तवाफ । व सूरत मुहम्मद की देखी जो साफ ॥ पढ़ी सबने तसबीह फिर

लाकलाम। बरस एक हज़ार उस जगह पर तमा-
म॥ कहा फिर खुदाने के नूरे नबी। तेरी मुझको
करना है खातिर सभी॥ तेरे वास्ते मैंने यह
चार चीज़। बनाई है देख इनको तू ऐ अज़ीज़॥
वोह है आब वो आतश दिगर बाद खाक। ये हैं
नाम चारों के ऐ नूर पाक॥ तू कर इनमें से एकको
इख्तियार। कि तेरी नबूअत करूं आशकार॥

रफ्तननूर पेश आब।

वो नूरे मुहम्मद ने देखा जो वाँ। के पानी
बकिबरो गजब है रवाँ॥ गया पास जाकर कहा
अस्सलाम। अलैकस्सलाम आब बोला तमाम॥
कहा फिर यह पानी से ऐबासफा। कि तू कौन
है नाम अपना बता॥ कहा नूर ने हूं मैं अब्दे
खुदा। तुझे भी उसीने है पैदा किया॥ कि हम

तुम हैं दोनों उसीके गुलाम । वह खालिक हमारा है बस लाकलाम ॥ कहा नूर ने फिर के दुनिया में तू । करेगा तू क्या जाके ऐ नेकरू ॥ कहा उसने जो होगी मेरी मुराद। वही मैं करूंगा तू कर येतमाद ॥ किया नूरने उससे फिर वह कलाम । कि बंदे को क्या अपनी मर्ज़ी से काम ॥ करे वोह जो राजी हो जिस्में खुदा । कि खालिक वही है वही रहेनुमा ॥ तु अपने को देख और कर नज़र। कि क्या ऐब है तुझमें और क्या हुनर॥ कहा उसने फिर ऐब है मुझ में क्या । अगर ऐब हो तो मुझे दे बता ॥ दिया नूरने उसको फिर येह जवाब । व फ़रमाने हक़ उसको बस बासवा-ब ॥ कि बन्दों को पैदा करेगा खुदा । नजासत वो डालेंगे तुझमें सदा ॥ हवा फिर करैगी तुझे पाक साफ़ । कि पाकीक तेरे यही है मसाफ़ ॥

कही आवने नूरसे फिर येह बात। मगर तूही बे-ऐब है पाक जात॥ येह सुन उससे फिर नूर ने यों कहा। के एक पाक बेऐब है वोह ख़ुदा॥ कि बंदा तो पुर ऐब है सरबसर। सजावार पाकी वही है मगर॥ व ईमान लाया येह सुनकर जवाब। सहादत का कलमा पढ़ा फिर सिताब॥ किया आवने बंदगी को कबूल। कि बेशक ख़ुदा का मुहम्मद रसूल॥

रफ्तननूर पेश बाद।

हुआ नूर फिर बाद से हमकलाम। कि कह बाद तू अपना मकसद तमाम॥ करेगी तू दुंनियामें कह काम क्या। कहा उसने जो होगी मेरी रजा॥ जवाब उसको फिर नूर ने यों दिया। कि खालिक ने है तुझको पैदा किया॥ तुझे बंदगी

चाहिये लाकलाम। नहीं अपनी मर्जी पर करना है काम ॥ तू अपने तईं देख तो एक जरा। कि क्या ऐब है तुझमें सरतावपा ॥ कहा बादने मुझ को दे तू बता। जो कुछ ऐब है मुझ में ऐ महेलका ॥ येह सुनकर के फिर नूरने ये कहा। गुरेजाँ तु है हरतरफ़ ऐ हवा ॥ न हरगिज किसी को तू आवे नज़र। कदम रखती है इस कदर तेजतर ॥ कहा उसने फिर नूरको देखकर। कि ऐ नूर बेऐब है तू मगर ॥ कहा नूरने बंदा है ऐबनाक। कि हर ऐबसे है खुदा एक पाक ॥ किया बादने फिर तो ईमाकबूल। पुकारी खुदा और मुहम्मद रसूल ॥

रफ्तननूर पेश आतश।

वहां से जो फिर नूर आगे चला। तो आतश से जाकर बखूबी मिला ॥ कहा आग से फिर

तू कह अपना काम। कि दुनियामें तू क्या करेगी सुदाम॥ बहुत तुझमें देखा है किब्रो ग़रूर। तुझे अपना मतलब है कहना ज़रूर॥ कहा आग ने फिरकि नूरे नबी। जो कुछ मुझको भावे करूं मैं वही॥ किया नूर ने उससे फिर यह कलाम। कि बंदे को क्या अपनी मरज़ी से काम॥ करे वहकि राज़ी हो जिसमें खुदा। कि ख़ालिक वही है वही रहनुमा॥ तू ऐब अपने को देख और कर नज़र। कि मालूम हो तुझको अपनी क़दर॥ कहा आब तू है कुशिन्दा तेरा। और है तेरी कुदरत दहिन्दा हवा॥ कहा आगने फिर कि ऐ पाक नूर। मगर तूही बेऐब है बेकुसूर॥ कहा नूरने बंदा है पुर गुनाह। कि हर ऐबसे पाक है वह इलाह॥ कहा आगने वहदहू लाशरीक। मोहम्मद रसूल उसका बस है तू ठीक॥

रफ़्तन नूर पेश ख़ाक।

हुवा नूर वासे जो आगे रवां। जहां खाक थी जाके पहुँचा वहां॥ कि थी इज्ज़ और इनकिसारी में वह। सरासर थी वस खाकसारी में वह॥ किया नूर ने पहिले जाकर सलाम। कहा उसने भी यह बखूबी तमाम॥ कि ऐ नूर खुश आमदी मरहबा! अलेकस्सलाम ऐ हबीबे खुदा॥ हुये नूर और खाक जो हमकलाम। कहा नूरने फिर बसद एहतराम॥ कि ऐ खाक दुनियामें परवरदिगार। करे अपने बंदों को जब आशकार॥ करेगी तू क्या काम बतला वहाँ। मुझे दे बता उसका नामो निशाँ॥ कहा उसने मैं क्या हूँ नाचीज़ खाक। की आजिज़ हूँ और सरबसर ऐबनाक॥ करूं मैं वही हो जो हक़ की रज़ा। नहीं और

मक़सद मेरा दूसरा॥ शहादत का कलमा पढ़ा
फिर पुकार। की मऽबूद बेशक हैं परवरदिगार॥
लिया नूरने फिर गलेसे लगा। बग़लगीर होकर
मिला और कहा॥ कि मैंने किया तुझको है
इख़्तियार। बहुत तुझमें है इज्ज़ और इन-
किसार॥ तुझे अव्वल आख़िर किया मैं क़बूल।
कि मक़सद मेरा तूही है ख़ाक धूल॥ कहाहै
नबीने यह बरहक़ कलाम। सुनो गोश दिलसे
तुम इसको तमाम॥ जहांतक कि जो आदमी
ज़ाद हैं। इसी चार अनसरकी बुनियाद हैं॥
कोई आतशी तब्ब आबी कोई। कोई तब्ब
ख़ाकी व बादी कोई॥ जो बादी हैं करतेहैं
किब्रो मनी। जो आबी जवांमर्द हैं हिम्मती॥
जो हैं आतशी तब्ब वोह हैं बख़ील। मुरव्वतकि
उनमें नहीं क़ालो कील॥ मगर हैं जो ख़ाकी वो

मिसकीन हैं। फ़क़ीर और आजिज़हैं वे कौन हैं॥

दर बयान असनाद नूरनामा।

नबी ने कहा है सुनो तुम बदिल। न माने जो कोई तो होगा ख़ाजिल॥ मेरा नूरनामा जो कोई पढ़े। सुने गोश दिलसे वया घर धरे॥ ख़ुदा उसको देगा सवाबे अज़ीम। गुनह उसकी सब बख़्शदेगा करीम॥ रहेगा वोह दुनिया में बा आबरू। न सख़्ती ज़माने की देखे कभू॥ बलाओं से वह घर रहे दर अमाँ। कि जिस घर में हो नूरनामा वहाँ॥ न आतश से पहुँचे उसे कुछ ख़लल। न ग़रक़ाब पानीमें हो वह महल॥ जो लावेगा इसपर कोई एतक़ाद। ख़ुदा उसकी हासिल करेगा मुराद॥ ये है नूरनामा मेरे नूर का। तुम्हें इसकी ताज़ीम लाना बजा॥ पढ़े जुमे

की शब जो इसको सदा । क़बूले खुदा हो मांगे दोआ ॥ पढ़े या सुने कोई जुमे की रात । वोह दोज़ख़से पावेगा आख़िर नजात ॥ करेगा खुदा उसको जन्नत नसीब । सदा वह रहेगा बरहमत क़रीब ॥ न आवे कभी उसको साले गराँ । रहे सख़्तिये निज़ा से दर अमाँ ॥ गुनह उसके और उसके माँबापके । खुदासे हैं उम्मेद जो बख़्शदे ॥ अगर जुमे की शब पढ़े ग़ौरसे । जो पढ़ना न जाने कहे और से ॥ कि तू मुझको पढ़कर सुनादे तमाम । वह पढ़करके उसको करे शादकाम ॥ खुदा देगा दोनों को जन्नत मोक़ाम । बर आवेंगे सब दीन दुनिया के काम ॥ सुनेंगे बहमहोके जो मुसलमीन । तो हों अहले दीन और अहले यक़ीन ॥ करेगा खुदा सबको रहमत से शाद । बर आवेगी सबके दिलोंकी मुराद ॥ वला और

आफ़त से हो दर अमाँ। करे नूरनामा को जो हिर्ज़ जाँ॥ मिले क़हतो लरज़े से उसको अमन। रहे तन्दुरुस्त उसका सारा बदन॥ अगर ज़हमती पर उसे दम करे। यक़ीं है कि फ़िलहाल बेग़म करे॥ जो इल्लत वजूदी से बीमार हो। तपेदिक़ हो या और आज़ार हो॥ व या बाद लक़वे का होवे मरज़। व या बाद कौलंज हो अलग़रज़॥ व या बाद हो सरा अन्दर दिमाग़। ग़रज़ हो किसी तर्हका उसको दाग़॥ पढ़े नूरनामे को बा एतक़ाद। वज़ू करके हो क़िबला रू बा मुराद॥ इसी तर्ह एक हफ़ता पैहम करे। पढ़े नूरनामेको और दम करे॥ यक़ीं है कि सेहत वह पावे तमाम। मरज़ उसका सब दूर हो लाकलाम॥ जो सरसाम बरसाम होवे अगर। व या हो शक़ीक़ा व दौरान सर॥ मरज़ हो बरस का व या हो

ज़ुज़ाम । पढ़े नूरनामेको उसपर तमाम ॥ शिफ़ा होगी कामिल बफ़ज़ले खुदा । कि हर रंजोज़हमतकी हैं ये दवा ॥ करे बिर्द जो इसको दिन रात का । न मोहताज होवें किसी बात का ॥ खुदा ने कहा है कि हूं मैं मुजीब । हरेएक रंजो इल्लत का शाफ़ी तबीब ॥ करेगा मेरे नूरकी जो सना । हरेएक दर्द से उसको दूंगा शिफ़ा ॥

दर बयान शुमायल नबी सल्लल्लाह अलैहे व सल्लम ।

सिफ़त मैं नबी की करूं क्या अदा । कि सरता बपा था बदन नूर का ॥ खुदाने सरे सरवरे अम्बिया । किया ऐन हिकमत से जलवा नुमा ॥

वो आँखें थीं उनकी वशर्मो हया। कि लब हक़की तसबीह में थे सदा॥ वो बीनी अतहर थी अंबर सरिश्त। मुअत्तर ज़ खुशबू चुबाग़े बहिश्त॥ वो गोशे मुबारक थे ग़ैरत से पुर। वो दंदाने रौशन थे जन्नत के दुर॥ ज़बाँ उनकी गोयाथी अज़ ज़िक्रे हक़। दहन उनका था नूरका यक तबक़॥ वो दो हाथ थे उनके पुर अज़ सख़ा। वो बाज़ू थे कूवत में ला इन्तिहा॥ वो सीना मुबारक था पुर अज़ सफ़ा। कि याक़ूत जन्नत से था वह बना॥ कमर उनकी बारीक थी पुरज़े नूर। शिकम इल्म से पुर था ज़ाहिर ज़हूर॥ बने सब्र से उनके आज़ा तमाम। रहा सब्रसे इसलिये उनको काम॥ वो मूये मुक़द्दस थे रश्के बहिश्त। ज़ हिकमत ख़ुदा पाक आँमू सरिश्त॥ थे हज़रत के वोह उस्तुख़ाँ नूर के। बने थे वो जन्नतके काफ़ूर के॥

वो दिल उनका यख़लास से था बना। सरापा कहूं क्या मैं उस नूर का ॥ इबादत में हक़ के थे दोनों क़दम। न ताअत से ग़ाफ़िल रहें एक दम ॥ कि मैं क्या हूं औ क्या है मेरी जबाँ। सिफ़त जो नबी की करूं मैं बयाँ ॥ करे जिनकी तारीफ़ परवरदिगार। कहे क्या कहां बंदये शरमिसार ॥ मेरी फ़िक्र को वाँ रसाई कहाँ। सरासर है माज़ूर अक़्लो जबाँ ॥ किया नूरनामे को अब मैं तमाम। नबीपर मैं भेजूं दरूदो सलाम॥

॥ इति ॥

रवायत सहीह ।

रवायत यह रावी से है एक और । सुनो इसको तुम और करो खूब ग़ौर ॥ वोह जो थे मोहम्मद ग़िज़ाली इमाम । कि मशहूर दुनिया में है जिनका नाम ॥ कुतुबख़ाना उनका जो था बे-शुमार । कि थे मऽतबर उसमें नुसख़े हज़ार ॥ जो देखा कुतुबख़ाने को एक रोज़ । ये नुसख़ा नज़र आगया दिल फ़रोज़ ॥ बग़ौर उसको देखा किये खूब सा । कि नुसख़ा बहुत खूब मरग़ूब था ॥ हक़ीक़त थी बस उसमें सब नूरकी । तो यह बात बस दिलमें मंज़ूर की ॥ कि भेजूँ मैं अब शाह महमूद को । कि पहुँचे वोह भी अपने मक़सूद

को। किसीने कहा जाके सुल्तान से॥ विलायत के शह अहले इरफ़ान से॥ ये देताहूँ मैं शाहको अब ख़बर। कि है नूरनामा बहुत मातबर॥ मोहम्मद ग़िज़ाली वोह है जिनका नाम। कुतुबख़ानेमें उनके है लाकलाम॥ ये सुनतेही शह वाँसे फिर कूच कर। मोहम्मद ग़िज़ाली के बस आये घर॥ बहुत ख़ल्क़ उसदम थी हाज़िर वहाँ। कि आये जो महमूद शाहे जहाँ॥ लिया नुसख़े को आँख से फिर लगा। दिया बोसा और सरके ऊपर रखा॥ मोहम्मद ग़िज़ाली से दरख़्वास्त कर। लिया शहने वोह नुसख़ए मातबर॥ दिया उसके शुकराने में गंजो माल। फ़क़ीरों को बेवों को बे क़ीलो क़ाल॥ वोह सुल्तान महमूद था ग़ज़नवी। कि जिसने किये जमा आलम सभी॥ हुवा सब किं दावतका वोह कारबन्द। किये बसकि कुर्बां

शुतुर गोसफ़न्द ॥ हर एकके तईं खिलअत दिया। दिया ज़र भी औौर लालो गौहर दिया॥ ये ज़र उसी शबको सुल्तान महमूद ने। उस अहले सखा साहेबे जूद ने॥ पढ़ा नूरनामे को बा सद अदब। ज़ियारत नबी की हुई वक़् शब॥ कहा ख़्वाब में शाह महमूद को। कि पहुँचा तूभी अपने मक़सूद को॥ तू बेगम हुआ ऐ शाहे ग़ज़नवी। खुदाने किया तुझको अपना वली॥ तू पढ़ नूरनामे को जो खुश हुआ। खुदा ने भी की तुझको जन्नत अता॥ हुई आँच दोज़ख तुझपर हराम। दिया तुझको जन्नत में आली मोक़ाम॥ जो उस शाहने देखा इस तर्ह ख़्वाब। किया शुक्र हक़ का बहुत बेहिसाब॥ किया राह में हक़ के फिर ज़र निसार। किये बरदे आजाद और एक हज़ार॥ कुएँ मस्जिदें मदरसे जा

बजा। ख़ुदा के दिये राहमें वाँ बना ॥ रऐयत
नवाज़ी पर बाँधी कमर। दिया भूखों प्यासोंको
ज़र बेशतर ॥ ख़ुदाने दुआ उसकी की मुस्त-
जाब। कि पहुँचा वोह मक़सदको अपने शिताब॥
इसीतर्ह या रब तू बहरे रसूल । दुआ मुझ
गुनहगार की कर क़बूल ॥ मुझे दीन दुनिया
में तू शाद रख। मेरे दोस्तों को तू आबाद
रख ॥ मुझे रखियो इज़्ज़तसे अन्दर जहाँ। मुझे
दीजियो उक़बा में अमनो अमाँ ॥ इलाही मेरे
आलको शाद रख। सदा घर को मेरे तू आबाद
रख ॥ इलाही बहक़्क़े नबी फ़ातमा। शहा-
दतपर कीजियो मेरा ख़ातमा ॥

कल्मा नामा।

ऐ हबीबे खुदा रसूलअल्लाह। कीजिये मुझ पै टुक करमकी निगाह॥ मुझको हर रोज़ वक़्त शामो पगाह। यह सखुन दिलप नक़्श हो वल्लाह॥ कलमए लाइलाह इल्लल्लाह। है मोहम्मद मेरा रसूलअल्लाह॥ शबे मेराज में रसूल खुदा। जबके पहुँचे बमस्जिदे अक्सा॥ देखते जिस तरफ़ नज़र को उठा। दरो दीवार से यही थी सदा॥ कल०॥ यह मोकर्रर' हदीस में आया। याने हज़रतने है यह फ़रमाया॥ बे मशक़्क़त बहिश्त को पाया। सिद्क़ दिलसे ज़बान पर लाया॥ कल०॥ बाद हम्दे खुदा व

नात रसूल। कर सिफ़त चार यार की माकूल॥
होगी बेशक ये मुन्क़बत मक़बूल। विर्द कर
इसका और कभी मत भूल॥ कल०॥ सबके
सरताज बाद पैग़म्बर। याने सिद्दीक़ अफ़ज़लो
अकबर॥ दर हुज़ूरे रसूल जिन्नो बशर। सिद्क़
दिलसे कहा यह खुश होकर॥ क़ल०॥ बह
फ़ारूक मुन्सफ़ो आदिल। ऐ खुदा मुझपे सहल
कर मुश्किल॥ हर घड़ी सुब्हो शाम मेरा दिल।
इस सख़ुन से कभू न हो ग़ाफ़िल॥ कल०॥
मज़हरे इल्म किबलए कौनैन। नाम उशमाँ ख़ि-
ताव ज़िल्नूरैन॥ रात दिन हक़की यादमें बेचैन।
यह वज़ीफ़ा उन्होंका था दिनरैन॥ कल०॥
अर्ज़ है हक़से यह मेरी हरबार। याने अज़ बह
हैदरे कर्रार॥ जबकि दरपेश होवे रोज़ शुमार।
सामने सबके मैं करूं इज़हार॥ कल०॥ माल

दौलतकी कुछ नहीं है हवस । है मेरी आरज़ यही अज़ बस ॥ छोड़े जब मुर्ग़ रूह तनका क़फ़स । तब कहे सिद्क़ दिल से यह बेकस ॥ कल० ॥
ऐ खुदावन्द ज़ुल्जलालो करम । बतुफ़ैले रसूल शाहे उमम ॥ जबकि हो मुझपे नज़ाका आलम । निकले मेरी ज़बाँ से यह उसदम ॥ कल० ॥
अज़-पए हुर्मते हुसैन व हसन । जिनसे ताज़ा है दहका गुल्शन ॥ होवे अनवरकी रातदिन सुम्रन । दरे जन्नतपे जो लिखा है सखुन ॥ कल० ॥

ख़ात्मा ।